राजभाषा सामर्थ्य संवर्द्धन व्याख्यानमाला

- रिपोर्ट -

सीएसआईआर - केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान(सीरी), पिलानी में दिनांक 24-25 जुलाई 2014 को राजभाषा सामर्थ्य संवर्द्धन व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। आयोजन की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक डॉ चंद्रशेखर ने की। प्रसिद्ध विज्ञान लेखक डॉ दुर्गादत्त ओझा, पूर्व वरिष्ठ वैज्ञानिक, भूजल विभाग, जोधपुर, इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे। श्री राकेश कुमार शर्मा, पूर्व वरिष्ठ उपसचिव, सीएसआईआर, नई दिल्ली तथा डॉ पूरन पाल, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी (चयन ग्रेड) इस आयोजन में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। साथ ही व्याख्यानमाला में परिषद प्रयोगशालाओं में अपनी सुदीर्घ राजभाषा सेवा के अनुभवों को साझा करने के लिए आमंत्रित वक्ता के रूप में श्रीमती शैलजा गिरि राव, पूर्व वरिष्ठ हिंदी अधिकारी (चयन ग्रेड), आईआईसीटी, हैदराबाद तथा डॉ रमाशंकर व्यास, पूर्व वरिष्ठ हिंदी अधिकारी (चयन ग्रेड), एनसीएल, पुणे उपस्थित थे। आयोजन का उद्देश्य संस्थान में हिंदी में कार्य करने के लिए उपलब्ध अनुकूल वातावरण का लाभ उठाते हुए राजभाषा कार्यों को और अधिक गति प्रदान करना था।

मुख्य अतिथीय उद्‌बोधन देते हुए डॉ दुर्गादत्त ओझा,
पूर्व वरिष्ठ वैज्ञानिक, भूजल विभाग, जोधपुर

उद्‌घाटन सत्र

व्याख्यानमाला का उद्‌घाटन 24 जुलाई 2014 को संस्थान के सभागार में सादे व गरिमामय समारोह के साथ हुआ। इस अवसर पर आमंत्रित अतिथियों के अतिरिक्त सभागार में संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं सहकर्मी उपस्थित थे। कार्यक्रम का शुभारंभ आमंत्रित अतिथियों को परंपरानुसार गुलदस्ता भेंट कर किया गया।

उद्‌घाटन सत्र में सभागार उपस्थित अतिथिगण एवं सहकर्मी

उद्‌घाटन सत्र के दौरान प्रसिद्ध विज्ञान लेखक **डॉ दुर्गादत्त ओझा, पूर्व वरिष्ठ वैज्ञानिक, भूजल विभाग, जोधपुर** ने अपने मुख्य अतिथीय उद्‌बोधन में कहा कि सीएसआईआर भारत में केंद्र सरकार द्‌वारा वित्त-पोषित सार्वजनिक क्षेत्र का सबसे बड़ा अनुसंधान संगठन है जो अपनी वैज्ञानिक तथा प्रौद्‌योगिकीय विशेषज्ञता के माध्यम से न केवल भारतीय उद्‌योगों की सहायता कर रहा है अपितु अपने शोध कार्यों से भारतीय जनमानस को निरंतर सहयोग कर रहा है। उन्होंने कहा कि यदि संक्षेप में कहा जाए तो सीएसआईआर भारत में विज्ञान का सार है। उन्होंने इस अवसर पर सीरी व सीएसआईआर की अन्य प्रयोगशालाओं की शोध उपलब्धियों की सराहना की तथा परिषद को ऐसा जीवंत एवं निरंतर प्रगतिशील संगठन बताया जो अपनी वैज्ञानिक व शैक्षणिक गतिविधियों से विश्व में अपना लोहा मनवा रहा है। उन्होंने कहा कि इस व्याख्यानमाला के आयोजन से संस्थान में न केवल राजभाषा कार्यों को गति मिलेगी अपितु संस्थान के अधिकारी/कर्मचारी अपना अधिकाधिक कार्य हिंदी में करने के लिए प्रेरित होंगे। उन्होंने आशा व्यक्त की कि डॉ चंद्रशेखर जैसे विद्‌वान एवं गुणी व्यक्ति के मार्गदर्शन में यह संस्थान उन्नति के नए सोपान तय करेगा। अंत में उन्होंने इस अवसर पर आमंत्रण के लिए निदेशक के प्रति आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर डॉ श्याम नारायण मिश्र, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी (चयन ग्रेड) ने सभागार में उपस्थित संस्थान के सहकर्मियों को मुख्य अतिथि

डॉ ओझा, विशिष्ट अतिथि श्री आर के शर्मा तथा डॉ पूरन पाल का औपचारिक परिचय दिया तथा संस्थान में पधारने के लिए उनके प्रति आभार व्यक्त किया।

अतिथि परिचय तथा कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए
डॉ श्याम नारायण, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी (च.ग्रे.)

संस्थान में राजभाषा गतिविधियों की चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि संस्थान में समय समय पर राजभाषा गतिविधियाँ आयोजित की जाती रही हैं जिनमें हिंदी संगोष्ठियाँ, हिंदी कार्यशालाएँ, अनुवाद-भाषा-हिंदी टंकण प्रशिक्षण कार्यक्रम, नवनियुक्त सहकर्मियों के लिए स्वागत एवं अभिमुखीकरण कार्यक्रम आदि सम्मिलित हैं और इस कड़ी में यह व्याख्यानमाला का आयोजन अपने आप में भिन्न और विशिष्ट है। उन्होंने आमंत्रित वक्ताओं श्रीमती राव तथा डॉ व्यास का भी संक्षिप्त परिचय देते हुए हार्दिक स्वागत किया। तदुपरांत डॉ मिश्र ने कार्यक्रम की संक्षिप्त रूपरेखा तथा आयोजन के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए सहकर्मियों से इस व्याख्यानमाला के सभी सत्रों में उपस्थित रहते हुए विशेषज्ञों के व्याख्यानों से लाभान्वित होने का अनुरोध किया।

अपने विशिष्ट अतिथीय उद्‌बोधन में **डॉ पूरन पाल,** वरिष्ठ हिंदी अधिकारी (चयन ग्रेड), सीएसआईआर मुख्यालय, ने परिषद मुख्यालय तथा संबद्ध प्रयोगशालाओं/संस्थानों में राजभाषा की प्रगति व भावी योजनाओं पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर सभागार में उपस्थित सहकर्मियों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि सीएसआईआर राजभाषा परिवार की प्रथम पीढ़ी ने सीएसआईआर में राजभाषा को वर्तमान स्थिति तक पहुँचाने में बहुत योगदान दिया है। उन्होंने कहा कि यद्‌यपि सीएसआईआर में राजभाषा की स्थिति अन्य सरकारी कार्यालयों व संगठनों की तुलना में बहुत बेहतर है किंतु अभी भी इस दिशा में बहुत कुछ किया जाना शेष है।

विशिष्ट अतिथीय उद्‌बोधन देते हुए डॉ पूरन पाल,
वरिष्ठ हिंदी अधिकारी (च.ग्रे.) परिषद मुख्यालय, नई दिल्ली

उन्होंने इस अवसर पर संघ की राजभाषा नीति पर प्रकाश डालते हुए राजभाषा अधिनियम 1963, राजभाषा नियम 1976, राजभाषा के संबंध में राष्ट्रपति महोदय के आदेश 1960, राजभाषा संकल्प 1968 आदि के आलोक में संसदीय राजभाषा समिति के गठन, समिति की अपेक्षाएँ व हमारा उत्तरदायित्व आदि विषयों पर प्रकाश डाला। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि संघ की राजभाषा नीति का अनुपालन एक अत्यंत गंभीर तथा महत्वपूर्ण विषय है। संसदीय समिति राजभाषा अधिनियम, नियम आदि की अवहेलना और अपालन को गंभीरता से लेती है। उन्होंने कहा कि यह एक संयोग है कि वे परिषद मुख्यालय में कार्यरत हैं और इसी कारण उन्होंने परिषद की लगभग सभी प्रयोगशालाओं/संस्थानों के संसदीय निरीक्षणों को देखा है और इसीलिए वे उन निरीक्षणों के परिणामों से भी परिचित रहे हैं। उन्होंने राजभाषा हिंदी के संबंध में केंद्र सरकार के कर्मचारियों से संसदीय समिति तथा सरकार की अपेक्षाओं को बताते हुए कहा कि हम सभी का यह व्यक्तिगत एवं सामूहिक दायित्व है कि हम अपने संगठन व संस्थान में राजभाषा नीति का पालन सुनिश्चित करें तथा अपने कार्यकलापों के माध्यम से राजभाषा के प्रचार-प्रसार में यथासंभव योगदान दें। अंत में उन्होंने इस अवसर पर आमंत्रित करने के लिए संस्थान के निदेशक के प्रति आभार व्यक्त किया।

श्री राकेश कुमार शर्मा, पूर्व वरिष्ठ उपसचिव, सीएसआईआर, नई दिल्ली ने भी अपने विशिष्ट अतिथीय उद्‌बोधन में स्वयं को संस्थान में आमंत्रित करने के लिए निदेशक महोदय के प्रति आभार व्यक्त किया।

सहकर्मियों को संबोधित करते हुए विशिष्ट अतिथि श्री राकेशकुमार शर्मा, पूर्व वरिष्ठ उपसचिव, सीएसआईआर, नई दिल्ली

इस अवसर पर अपने उद्‌बोधन में उन्होंने कहा कि संसदीय राजभाषा समिति के सरकारी कार्यालयों के राजभाषा संबंधी निरीक्षणों से इन कार्यालयों में राजभाषा के प्रति गंभीर वातावरण तैयार होता है तथा प्रशासन व अन्य विभागों में हिंदी के कार्यों में गति आती है। परंतु उन्होंने खेद व्यक्त करते हुए कहा कि अधिकांश कार्यालयों में ऐसा केवल निरीक्षणों के होने के समय केवल कुछ समय के लिए ही होता है। उन्होंने कहा कि हमें यह स्थिति बदलनी होगी। इसी बृहत उद्देश्य को सामने रख कर परिषद से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति के उपरांत वे राजभाषा की सेवा से जुड़ गए। परंतु यह कैसे हो गया, इसका उन्हें भान ही नहीं हुआ। उन्होंने कहा कि संभवत: यह मुख्यालय में राजभाषा कार्यों से लंबे समय तक जुड़े रहने के कारण हुआ होगा। केंद्र सरकार के कार्यालयों के संसदीय राजभाषा निरीक्षण पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि अब हमें यह भूल जाना चाहिए कि यदि हम राजभाषा हिंदी को अनदेखा करेंगे तो कोई नहीं पूछेगा। समिति अब न केवल संसदीय प्रश्नावली के माध्यम से निरीक्षण कर रही है अपितु कार्यालयों में जाकर दिए गए आँकड़ों की जाँच भी कर रही है। इसलिए अब राजभाषा की अवहेलना और अपालन करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों से व्यक्तिगत रूप से भी पूछा जाएगा। उन्होंने कहा कि राजभाषा अनुपालन के संबंध में जारी व्यक्तिश: आदेशों का उल्लंघन अन्य आदेशों की अवहेलना के समान अक्षम्य है। इसके लिए संबंधित अधिकारी/कर्मचारी के विरुद्ध अनुशासनिक कार्रवाई भी की जा सकती है।

इस अवसर पर राजभाषा हिंदी में कार्य करने के लिए उपलब्ध डिजिटल टूल्स पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि इन तकनीकी टूल्स की सहायता से हिंदी में कार्य करना सरल हो गया है। अब हम यूनिकोड या गूगल के माध्यम से सरलता से कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि हमने सहजडिजिटल नामक एक संस्था तथा सहजडिजिटल.कॉम नामक एक वेबसाइट तैयार की है जिसमें सभी प्रकार के कार्यालयी पत्राचार आदि के टेम्प्लेट्स तैयार किए गए हैं जिनमें बहुत कम जानकारी/सूचना भर कर न केवल हिंदी /द्विभाषी पत्राचार बढ़ाया जा सकता है अपितु टिप्पण कार्य भी सरलता से किया जा सकता है। उन्होंने बताया कि हिंदी ई-मेल के द्वारा भी हिंदी पत्राचार की संख्या बढ़ाई जा सकती है। उन्होंने कहा कि कल आयोजित हिंदी कार्यशाला में प्रतिभागियों को इन टेम्प्लेट्स की जानकारी दी गई है तथा इन पर अभ्यास कराया गया है। अपने उद्‌बोधन के अंत में उन्होंने कहा कि कल संस्थान के विभागाध्यक्षों तथा वरिष्ठ अधिकारियों के साथ आयोजित किए जाने वाले विशेष सत्र में भी उन्हें डिजिटल टूल्स पर व्यावहारिक अभ्यास कराया जाएगा। उन्होंने आशा व्यक्त की कि हमारे इस प्रयास से सभी अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए कंप्यूटर पर हिंदी में काम करना सरल हो जाएगा और हमारा विश्वास है कि आप सभी इसका लाभ अवश्य उठाएँगे।

डॉ मिश्र को सीएसआईआर राजभाषा परिवार की ओर से लाइफटाइम अचीवमेन्ट पुरस्कार के रूप में मान पत्र भेंट करते हुए डॉ पूरनपाल, साथ में हैं निदेशक, सीरी व अतिथिगण तथा डॉ ओझा से सम्मानस्वरूप शॉल प्राप्त करते हुए डॉ मिश्र

सम्मान

व्याख्यानमाला के उद्‌घाटन सत्र के दौरान परिषद मुख्यालय के वरिष्ठ हिंदी अधिकारी डॉ पूरन पाल ने सीएसआईआर-सीरी में सुदीर्घ राजभाषा सेवा के लिए डॉ श्याम नारायण मिश्र का संपूर्ण सीएसआईआर परिवार की ओर से सम्मान किया तथा उन्हें सीएसआईआर राजभाषा परिवार की ओर से लाइफटाइम अचीवमेन्ट पुरस्कार के रूप में एक

मान पत्र तथा शॉल भेंट कर सम्मानित किया। उन्होंने इस अवसर पर सभागार में उपस्थित अतिथियों व संस्थान के सहकर्मियों के समक्ष डॉ मिश्र की उपलब्धियों की चर्चा की तथा उनके कार्यों की सराहना की।

इसी प्रकार डॉ श्याम नारायण मिश्र की राजभाषा सेवा तथा हिंदी उत्कृष्ट में लेखन कार्य के लिए मुख्य अतिथि डॉ दुर्गादत्त ओझा ने भी अपनी ओर से शॉल भेंट कर डॉ मिश्र को सम्मानित किया। उन्होंने आशा व्यक्त की कि सेवानिवृत्ति के उपरांत भी डॉ मिश्र इसी प्रकार लेखन कार्य के माध्यम से हिंदी से जुड़े रहेंगे।

उद्घाटन सत्र में अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए
डॉ.चंद्रशेखर, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी

व्याख्यानमाला के उद्घाटन सत्र के दौरान अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए डॉ चंद्रशेखर ने संस्थान के आमंत्रण पर यहाँ आने के लिए सभी अतिथियों को धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि डॉ पूरन पाल द्वारा दिए गए व्याख्यान से काफी जानकारी मिली है। उन्होंने कहा कि डॉ पूरन पाल ने अपने व्याख्यान में संसदीय निरीक्षण तथा राजभाषा अधिनियम व नियमों को विस्तार से समझाया है जिससे इस संबंध में न केवल स्वयं उन्हें नई जानकारी मिली है बल्कि सभागार में उपस्थित सभी अधिकारी-कर्मचारी भी लाभान्वित हुए होंगे। राजभाषा को अलग और सरल ढंग से बताने-समझाने के लिए उन्होंने डॉ पूरन पाल को धन्यवाद दिया। उन्होंने स्वीकार किया कि राजभाषा नीति का अनुपालन एक अत्यंत गंभीर, व्यापक तथा महत्वपूर्ण विषय है। उन्होंने संसदीय निरीक्षण के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि संस्थान के संसदीय निरीक्षण से पूर्व हम सभी में इस संबंध में जागरूकता की कमी थी परंतु निरीक्षण के उपरांत स्थिति में बहुत सुधार हुआ है जो आगामी निरीक्षण में अवश्य परिलक्षित होगा। उन्होंने संस्थान के सभी अधिकारियों/ कर्मचारियों का आह्वान करते हुए उनसे अपने राजभाषा दायित्वों का यथाशक्ति निर्वहन करने के लिए कहा। व्यक्तिश: आदेश पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि यद्यपि यह अत्यंत महत्वपूर्ण आदेश है और शीघ्र ही सभी सहकर्मियों को पुन: जारी किया जाएगा। परंतु उन्होंने जोर दे कर कहा कि उनका विश्वास है कि राजभाषा अनुपालन आदेशों के बल पर नहीं अपितु इसे व्यक्तिगत दायित्व के रूप में लेने पर ही हो सकता है। केवल एक व्यक्ति या अनुभाग के द्वारा हिंदी में कार्य करने से हिंदी के कार्यों में वृद्धि नहीं हो सकती बल्कि सभी विभागों/अनुभागों के समेकित प्रयासों से ही इस दिशा में आशानुरूप परिणाम मिल सकते हैं और मुझे प्रसन्नता है कि हमारे सभी साथी इस दिशा में प्रयासरत हैं। उन्होंने इस अवसर पर डॉ मिश्र द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों में भी दिए गए योगदान की प्रशंसा की।

उद्घाटन सत्र का संचालन करते हुए व्याख्यानमाला के संयोजक
श्री रमेश बौरा, हिंदी अधिकारी

इससे पूर्व उद्घाटन सत्र का संचालन करते हुए व्याख्यानमाला के संयोजक **श्री रमेश बौरा, हिंदी अधिकारी** ने सभी अतिथियों का औपचारिक स्वागत किया। इस अवसर पर उन्होंने सीएसआईआर राजभाषा परिवार की प्रथम पीढ़ी के सभी हिंदी कर्मियों के प्रति सम्मान व्यक्त करते हुए उनके योगदान को याद किया तथा आशा व्यक्त की कि आगामी पीढ़ियाँ सीएसआईआर में राजभाषा को नए शिखर तक पहुँचाएँगी। उन्होंने इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ चंद्रशेखर के सुयोग्य मार्गदर्शन व राजभाषा गतिविधियों में सहयोग के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह हमारा सौभाग्य है कि हमें डॉ चंद्रशेखर जैसा हिंदी प्रेमी तथा सरल एवं गुणी व्यक्तित्व निदेशक के रूप में मिला है।

सत्र के अंत में संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के वरिष्ठ सदस्य **श्री पीवीएल रेड्डी,** प्रमुख, ज्ञान संसाधन केंद्र ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए आमंत्रित अतिथियों व निदेशक महोदय के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने सभी प्रतिभागियों से अपेक्षा की कि वे आगामी सत्रों में उपस्थित रह कर विद्वान विशेषज्ञों के व्याख्यानों से लाभान्वित होंगे तथा उनके दीर्घ अनुभव का लाभ उठाएँगे। उन्होंने आयोजन को सफल बनाने में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग देने के लिए सभी सहकर्मियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

तकनीकी सत्र - 1 (24 जुलाई 2014, प्रात: 11 से अप. 1 बजे)

व्याख्यानमाला के दौरान आयोजित किए गए तकनीकी सत्रों का विवरण निम्नवत है।

आधार(की-नोट) व्याख्यान

1. **हिंदी में विज्ञान लेखन एवं संप्रेषण**
   डॉ दुर्गादत्त ओझा, पूर्व वरिष्ठ वैज्ञानिक, भूजल विभाग, राजस्थान सरकार
2. **राजभाषा कौशल विकास - नवीनतम संभावनाएँ**
   श्री राकेश कुमार शर्मा, पूर्व वरिष्ठ उपसचिव, सीएसआईआर,नई दिल्ली

तकनीकी सत्र - 2 (24 जुलाई 2014, अप. 2.30 से सायं 5 बजे)

1. **संसदीय राजभाषा निरीक्षण तथा संघ की राजभाषा नीति**
   डॉ पूरन पाल, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी (चयन ग्रेड), सीएसआईआर, नई दिल्ली
2. **राजभाषा अनुपालन - दशा व दिशा**
   डॉ रमाशंकर व्यास, पूर्व वरिष्ठ हिंदी अधिकारी (चयन ग्रेड), एनसीएल पुणे
3. **सीएसआईआर में राजभाषा अनुपालन**
   श्रीमती शैलजा गिरि राव, पूर्व वरिष्ठ हिंदी अधिकारी (चयन ग्रेड), आाईआईसीटी, हैदराबाद

विशेष सत्र

इसके अतिरिक्त व्याख्यानमाला के अंतिम चरण में संस्थान के सभी विभागाध्यक्षों, वरिष्ठ वैज्ञानिकों तथा अधिकारियों के लिए विशेष सत्र का आयोजन किया गया। इस विशेष सत्र की अध्यक्षता डॉ चंदशेखर, निदेशक,सीएसआईआर-सीरी ने की। इस सत्र में डॉ पूरन पाल ने संसदीय समिति के गठन, समिति गठन के उद्देश्य तथा सरकार की राजभाषा नीति पर संक्षेप में प्रकाश डालते हुए संसदीय राजभाषा निरीक्षण का महत्व व इसकी गंभीरता को समझाया। डॉ पूरन पाल ने सभी वरिष्ठ अधिकारियों के समक्ष राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियमों, राष्ट्रपति महोदय के आदेश तथा राजभाषा संकल्प की भी चर्चा की। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार के प्रत्येक कार्यालय/संगठन में राजभाषा नीति का अनुपालन अनिवार्य है तथा हम सभी को इसे गंभीरता से लेना चाहिए। संसदीय निरीक्षण प्रश्नावली के संबंध में अधिकारियों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि यद्यपि राजभाषा के अनुपालन व कार्यान्वयन के संबंध में सरकार की नीति प्रेरणा व प्रोत्साहन की है परंतु जानबूझ कर इसकी अवहेलना या अपालन करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों पर अनुशासनिक कार्रवाई भी की जा सकती है। इस अवसर पर उन्होंने संसदीय निरीक्षण प्रश्नावली में सही आँकड़े देने पर भी बल देते हुए कहा कि हाल ही में समिति द्वारा कुछ कार्यालयों का प्रत्यक्ष राजभाषा निरीक्षण भी किया गया है जिसमें आँकड़े गलत पाए जाने पर समिति ने इसे गंभीरता से लिया है। उन्होंने अधिकारियों द्वारा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देकर उनकी जिज्ञासा व शंकाओं का समाधान भी किया।

वरिष्ठ अधिकारियों के लिए आयोजित विशेष सत्र में प्रस्तुतीकरण देते हुए श्री राकेश कुमार शर्मा

इस अवसर पर श्री आर के शर्मा ने संस्थान के सभी वरिष्ठ अधिकारियों को बताया कि प्रशासनिक प्रकृति के कार्यों को हिंदी व द्विभाषी रूप में करने के लिए डिजिटल टूल्स अत्यंत सरलता से उपयोग किए जा सकते हैं। अत: इनका महत्व व उपयोगिता निर्विवाद है। उन्होंने कहा कि यद्यपि राजभाषा कार्यान्वयन का प्रत्यक्ष दायित्व प्रत्येक संगठन/कार्यालय के प्रमुख का है परंतु व्यक्तिगत

उत्तरदायित्व तथा जवाबदेही संबंधित अधिकारी/कर्मचारी की ही है। उन्होंने हाल ही में हुए कुछ संसदीय निरीक्षणों का हवाला देते हुए अपने सुदीर्घ प्रशासनिक अनुभव तथा जुटाई गई जानकारी के आधार पर कहा कि अब समिति राजभाषा नीति के उल्लंघन व अवहेलना पर कड़े कदम भी उठा रही है जिसमें ऐसे अधिकारियों/कर्मचारियों पर अनुशासनिक कार्रवाई भी शामिल है। उन्होंने उपस्थित अधिकारियों को अपनी संस्थान सहज डिजिटल तथा हिंदी में सरलता के काम करने के लिए उपलब्ध विभिन्न डिजिटल टूल्स से भी परिचित कराया। उन्होंने इस अवसर पर पावर पॉइंट प्रस्तुतीकरण के माध्यम से सभी अधिकारियों को कंप्यूटर पर यूनिकोड सक्रियण, सामान्य तथा फोनेटिक हिंदी टंकण, गूगल इनपुट टूल, गूगल ट्रांस्लेट, इंटरनेट पर उपलब्ध विभिन्न शब्दकोशों की भी जानकारी दी तथा कुछ अधिकारियों को उच्चारण-आधारित फोनेटिक टंकण के माध्यम से हिंदी टंकण का अभ्यास भी कराया। उन्होंने वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा इस संबंध में पूछे गए प्रश्नों का भी उत्तर दिया तथा उनकी जिज्ञासा शांत की। सभी अधिकारियों ने श्री शर्मा के उत्साह व राजभाषा के प्रति समर्पण की सराहना की।

सत्र की अध्यक्षता करते हुए डॉ चंद्रशेखर ने कहा कि संस्थान राजभाषा नीति के अनुपालन के लिए कटिबद्ध है तथा निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए हरसंभव प्रयास किए जा रहे हैं और इनमें और अधिक तेजी लाई जाएगी। उन्होंने सभी उपस्थित अधिकारियों से इस दिशा में और अधिक सक्रिय होने का अनुरोध किया।

अतिथि सम्मान

इस विशिष्ट सत्र के अंत में डॉ चंद्रशेखर, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी, ने सभी आमंत्रित अतिथियों को संस्थान का स्मृति चिह्न तथा शॉल भेंट कर सम्मानित किया। निदेशक महोदय ने संस्थान के निमंत्रण पर यहाँ पधारने तथा विभिन्न सत्रों में व्याख्यान दे कर सहकर्मियों को लाभान्वित करने के लिए सभी अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

श्री आर के शर्मा, डॉ पूरन पाल, डॉ रमाशंकर व्यास तथा श्रीमती शैलजा गिरि राव को शॉल तथा स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित करते हुए डॉ चंद्रशेखर, निदेशक,सीएसआईआर-सीरी

इसके बाद डॉ श्याम नारायण मिश्र, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी(चयन ग्रेड) ने इस विशेष सत्र में संसदीय राजभाषा समिति तथा राजभाषा नीति पर संबोधन के लिए डॉ पूरन पाल तथा डिजिटल टूल्स पर महत्वपूर्ण जानकारी देने व अभ्यास कराने के लिए श्री राकेश कुमार शर्मा के प्रति आभार व्यक्त किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने अपने पूर्व वरिष्ठ हिंदी अधिकारियों श्रीमती राव तथा डॉ व्यास का भी अपनी उपस्थिति से इस आयोजन को गरिमा प्रदान करने के लिए आभार व्यक्त किया। साथ ही इस सत्र में उपस्थित रहने के लिए सभी अधिकारियों को धन्यवाद दिया। अंत में उन्होंने इस संपूर्ण आयोजन में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग करने के लिए राजभाषा कार्यान्वयन समिति तथा सभी सहकर्मियों को भी धन्यवाद दिया।

इस प्रकार संस्थान में आयोजित दो दिवसीय राजभाषा सामर्थ्य संवर्द्धन व्याख्यानमाला संपन्न हुई।